Paul Distilled by Gary W. Burnett

गैरी डब्ल्यू. बर्नेट (Gary W. Burnett) · जर्मन अनुवाद: Hans-Jörg Ronsdorf · अप्रैल 2022 · अक्टूबर 2026 में संशोधित

पौलुस का सार (संक्षेप में उसकी सेवकाई और उसका संदेश)

बर्नेट (Burnett) बेलफ़ास्ट (Belfast) में धर्मविज्ञान के प्रोफ़ेसर थे।

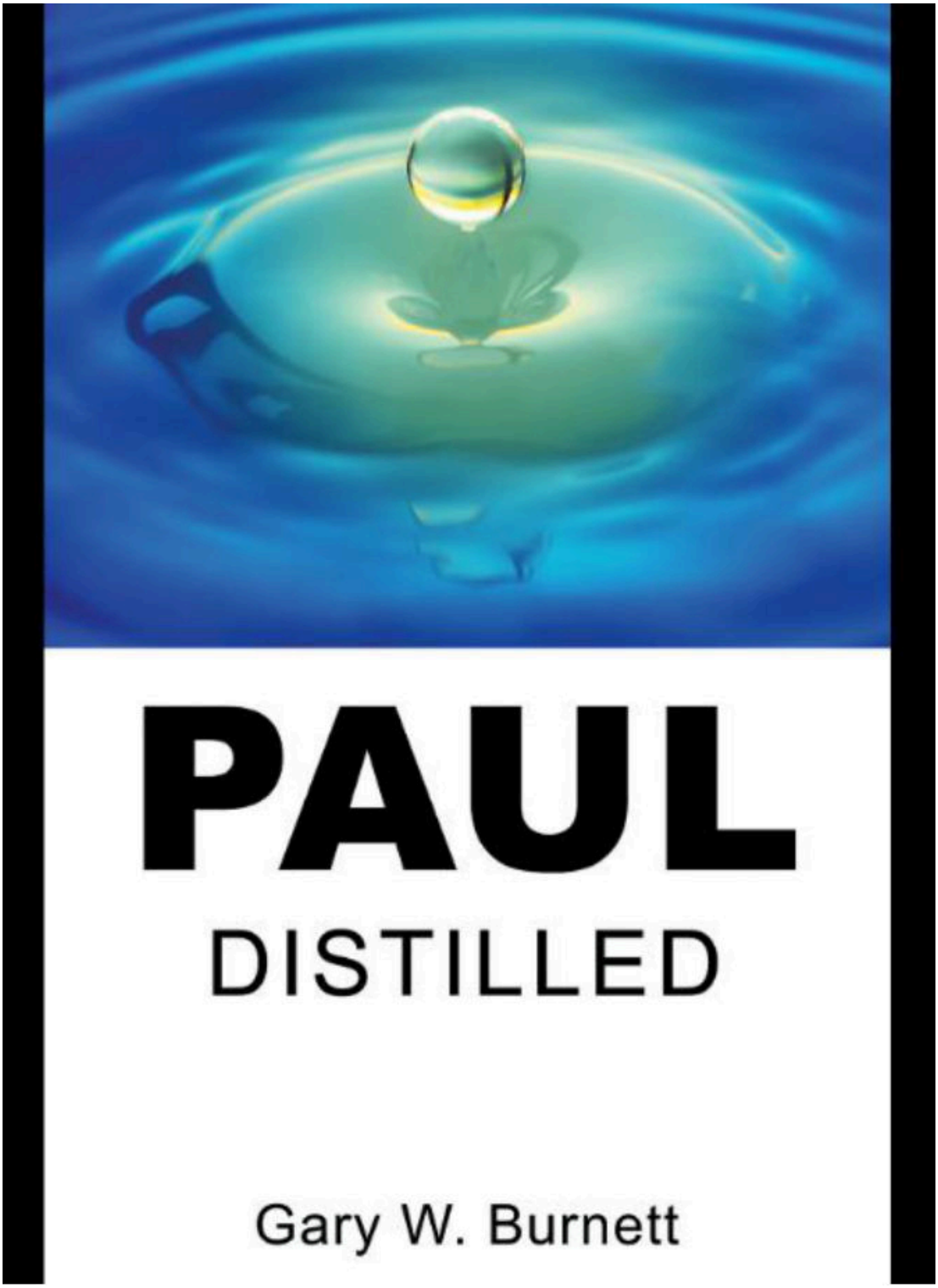

यहाँ वे अपनी पुस्तक का परिचय देते हैं:

Paul Distilled by Gary W Burnett - YouTube

यहाँ हर अध्याय का एक छोटा और अनुशंसनीय सारांश मिलता है: Fitzroy Sunday Nights - YouTube

भूमिका

अध्याय 1: परमेश्वर का संसार को बदल देने वाला प्रेम

अध्याय 2: प्रेम एक क्रिया है

अध्याय 3: सुसमाचार

अध्याय 4: क्रूस पर चढ़ाया गया परमेश्वर

अध्याय 5: पुनरुत्थान आरंभ हो चुका है

अध्याय 6: जीवन देने वाला आत्मा

अध्याय 7: यीशु, संसार का एकमात्र सच्चा प्रभु

अध्याय 8: संसार में परमेश्वर की धार्मिकता बनना

अध्याय 9: क्रांतिकारी शांति-प्रियता

अध्याय 10: कंगालों की सुधि लीजिए

अध्याय 11: भय की औषधि

अध्याय 12: पौलुस और अगुवों के रूप में स्त्रियाँ

अध्याय 13: मिलकर संसार को बदलना

अध्याय 14: सब कुछ फिर से घर लाना

पौलुस और अगुवों के रूप में स्त्रियाँ

पहली शताब्दी में स्त्रियाँ

पौलुस के लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण था कि मसीहा यीशु का शुभ समाचार सब मनुष्यों के लिए है। जीवन का परमेश्वर का वरदान, अर्थात नई सृष्टि, बिना भेदभाव के थी और उसने सब मानवीय दीवारों को तोड़ दिया। पौलुस का संसार अत्यंत पदानुक्रमिक था, और जब उसने यीशु के अनुयायियों के समुदाय स्थापित किए, तो उसे यह सुनिश्चित करना पड़ा कि वे सुसमाचार के पूरे प्रभाव को समझें। उसने उनसे कहा कि मसीह में सब मनुष्य बराबर हैं। इसलिए ये समुदाय ऐसे भेदों को अब सहन नहीं कर सकते थे जो जातीय पहचान – कोई यहूदी है या अन्यजाति –, सामाजिक और आर्थिक स्थिति – कोई दास है या स्वतंत्र – या लिंग – कोई पुरुष है या स्त्री – पर आधारित हों। पौलुस के संसार में, उसके अपने घर यहूदी धर्म में भी और सामान्य रूप से पहली शताब्दी की यूनानी (हेलेनिस्टिक) संस्कृति में भी, स्त्रियाँ दूसरे दर्जे की नागरिक थीं। स्त्री-द्वेष व्यापक रूप से फैला हुआ था। नाटककार और दार्शनिक स्त्रियों की खुलकर निंदा करते थे – यूरिपिडीज़ (Euripides) ने उन्हें "विनाश का यह प्राणी" कहा, जबकि

अरस्तू (Aristoteles) स्त्री को "एक विकृत पुरुष" मानता था। कुछ अपवाद अवश्य थे, परन्तु सामान्यतः स्त्रियों के साथ उनके पति की संपत्ति जैसा व्यवहार किया जाता था, उन्हें कोई औपचारिक शिक्षा नहीं मिलती थी और कुल मिलाकर उन्हें पूर्ण व्यक्ति नहीं माना जाता था।

यहूदी परंपरा में स्त्री को सामान्यतः कम महत्व दिया जाता था। पहली शताब्दी के यहूदी इतिहासकार जोसीफ़स (Josephus) ने कहा कि स्त्री "सब बातों में पुरुष से हीन" है, और यहूदी दार्शनिक फ़िलो (Philo) का मत था कि स्त्रियाँ "स्वभाव से अपूर्ण और भ्रष्ट", तर्कहीन और "सम्मान में पुरुष के बराबर नहीं" हैं। दूसरी शताब्दी के सिराख (Sirach) ने कहा कि "स्त्रियाँ लज्जा का कारण बनती हैं", और रूबेन के नियम-पत्र (Testament des Ruben) में साफ़-साफ़ कहा गया है कि "स्त्रियाँ बुरी हैं"। उस समय के यहूदी आराधनालयों में स्त्रियों को केवल सुनना होता था और उन्हें बोलने की अनुमति नहीं थी; उन्हें सभा की पूर्ण सहभागी नहीं माना जाता था। वह पुरुषों का संसार था।

पौलुस और स्त्रियाँ

आज अक्सर ऐसा लगता है कि स्त्रियों के संबंध में पौलुस उस संस्कृति से बहुत भिन्न नहीं था जिसमें वह रहता था। कुछ लोग मानते हैं कि स्त्रियों के बारे में पौलुस का दृष्टिकोण बस पूरी तरह पुराना पड़ चुका है और आधुनिक संसार के लिए, जिसमें हम सब जानते हैं कि पुरुष और स्त्री बराबर अधिकार रखते हैं, अब प्रासंगिक नहीं है। हमें पौलुस को भूल जाना चाहिए। वह बस लिंगभेदी है, शायद स्त्री-द्वेषी भी। दूसरों के लिए पौलुस को इस बात के प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है कि कलीसिया में केवल पुरुषों को ही शिक्षक और अगुवे होना चाहिए। पूरे-पूरे संप्रदाय आज भी स्त्रियों को अगुवाई से बाहर रखते हैं। कुछ लोगों के लिए पुरुष और स्त्रियाँ केवल एक-दूसरे के पूरक हैं, बराबर मूल्य के नहीं, और पुरुष ही वे हैं जिन्हें विवाह और कलीसिया में अधिकार रखना चाहिए। परन्तु पौलुस के बारे में ये दोनों धारणाएँ उसकी पत्रियों में हम जो पढ़ते हैं उसकी गलत व्याख्या करती हैं और पहली शताब्दी के संसार को गलत समझती हैं। क्योंकि पौलुस की पत्रियों का ध्यानपूर्वक पठन हमें एक बिल्कुल भिन्न निष्कर्ष तक ले जाता है। पौलुस के लिए स्त्रियाँ और पुरुष एक-दूसरे पर निर्भर हैं (1 कुरिन्थियों 11:11), उन्हें एक दूसरे के अधीन रहना है (इफिसियों 5:21) और विवाह के भीतर यौन संबंधों के विषय में वे बराबर अधिकार रखते हैं (1 कुरिन्थियों 7:3)। पौलुस के लिए आत्मा के सब वरदान लिंग की परवाह किए बिना हर किसी के लिए उपलब्ध थे, और हर किसी को – स्त्रियों को भी और पुरुषों को भी – आत्मिक वरदानों की, विशेष रूप से भविष्यद्वाणी की, लालसा करनी थी। यीशु के सब अनुयायी, स्त्रियाँ और पुरुष, समान रूप से "मसीह में" थे और मसीह की छवि में बदलते जा रहे थे (2 कुरिन्थियों 3:18)।

इसके अतिरिक्त यह स्पष्ट है कि पौलुस ने सेवकाई में अगुवों के रूप में स्त्रियों को स्वीकार किया। उसके लिए स्त्रियाँ भी पुरुषों की तरह भरोसेमंद साथी थीं और बराबर अधिकार रखती थीं। वह स्त्रियों को "सहकर्मी", "सुसमाचार में मेरे साथ परिश्रम करने वाली" और "सच्ची साथी" कहता है। जब हम देखते हैं कि पौलुस स्त्रियों के लिए इन उपाधियों का, और साथ ही "सेविका (डीकन)", "अगुवा", "मसीह यीशु में सहकर्मी" और – जैसा हम अभी देखेंगे – "प्रेरित" का भी उपयोग करता है, तो पौलुस का एक ऐसा चित्र उभरता है जो उस संसार से बिल्कुल विपरीत है जिसमें वह रहता था, और उस ढंग से भी जिसमें आज अक्सर उसे प्रस्तुत किया जाता है। जो लोग कलीसिया में स्त्री की भूमिका को पीछे धकेलना चाहते हैं, वे सामान्यतः 1 कुरिन्थियों और 1 तीमुथियुस के दो पदों की ओर संकेत करते हैं। इन पदों पर ध्यान देना महत्वपूर्ण तो है, परन्तु जब हम पौलुस के बारे में विचार करते हैं, तो वे वास्तव में आरंभ करने का सही स्थान नहीं हैं।

पुराना नियम और यीशु

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि पौलुस यहूदी था और अपने यहूदी शास्त्रों को भली-भाँति जानता था, जिनमें हमें अद्‌भुत स्त्री अगुवे मिलते हैं, जैसे मरियम (Mirjam), इस्राएल की भविष्यद्वक्तिन अगुवा और संगीत-अगुवा; दबोरा (Debora), एक और भविष्यद्वक्तिन, जिसने न्यायियों के समय में अपने देश की बड़ी सफलता से अगुवाई की; और हुल्दा (Hulda), जिसे राजा योशिय्याह ने सब पुरुष भविष्यद्वक्ताओं से बढ़कर चुना। इनमें से किसी की भी, और इस्राएल की राजमुकुट पहनी हुई रानियों में से किसी की भी, उसकी अगुवाई की भूमिका के कारण इसलिए कभी आलोचना नहीं की गई कि वह स्त्री थी। फिर यशायाह 40:9 में वह सुसमाचार सुनाने वाली है, जो यहोवा के राज्य के आने का शुभ समाचार घोषित करती है। इब्रानी भाषा यहाँ प्रचार करने वाली को स्पष्ट रूप से स्त्री बताती है, जो हमारे अधिकांश जर्मन अनुवादों में खो जाता है। भजन संहिता 68:11 में दूसरी प्रचार करने वाली स्त्रियाँ सामने आती हैं: "प्रभु वचन सुनाता है, और उसे सुनाने वाली स्त्रियाँ एक बड़ी सेना हैं"। और निश्चय ही हमें योएल भविष्यद्वक्ता की यह भविष्यद्वाणी नहीं भूलनी चाहिए कि परमेश्वर अपना आत्मा उंडेलेगा, जिससे "तुम्हारी बेटियाँ और बेटे भविष्यद्वाणी करेंगे" – जिसे, जैसा सब जानते हैं, पतरस ने अपने पिन्तेकुस्त के उपदेश में उठाया, जब उसने भीड़ को समझाया कि क्या हो रहा था। और हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि कैसे भजन संहिता, यशायाह, होशे और व्यवस्थाविवरण परमेश्वर का वर्णन माता के रूप में करते हैं। अपने समकालीनों द्वारा स्त्रियों के नकारात्मक मूल्यांकन के बावजूद पौलुस अपनी बाइबल जानता था और स्त्री अगुवों, भविष्यद्वक्तिनों और प्रचारिकाओं की उस सशक्त परंपरा से भली-भाँति परिचित था जो उसकी विरासत थी।

और उसे गमलीएल (Gamaliel) ने शिक्षा दी थी, जिसका उसकी अपनी और बाद की पीढ़ियों में बहुत आदर किया जाता था। जितना हम जानते हैं, गमलीएल फ़रीसी यहूदी धर्म के उन दूसरे रब्बियों से भिन्न था, जो स्त्रियों के बारे में बहुत निम्न राय रखते थे। अपनी उक्तियों में, जो मिश्ना (Mischna) में सुरक्षित हैं, गमलीएल स्त्रियों को स्वीकार करता है, उनके साथ पुरुषों के बराबर व्यवहार करता है, उनके कल्याण को बढ़ावा देता है और उनके बारे में कभी अपमानजनक बातें नहीं कहता – दूसरे रब्बी शिक्षकों के बिल्कुल विपरीत, जो, जैसा हमने देखा, सीधे-सीधे स्त्री-द्वेषी थे। पौलुस के सामने यीशु का उदाहरण भी था, जिसने अपने समय के दूसरे शिक्षकों के विपरीत स्त्रियों को अपने चरणों में बैठकर सीखने की अनुमति दी। यीशु ने स्त्री अनुयायियों का स्वागत किया, और कुएँ पर सामरी स्त्री जैसी स्त्रियों से उसकी भेंटें, जिनमें उसने कई सामाजिक परंपराओं को तोड़ा, स्त्रियों के प्रति उसकी सकारात्मक स्वीकृति की गवाही देती हैं। अनगिनत स्त्रियाँ थीं जिन्हें उसके चंगा करने वाले हाथों ने छुआ, जिनमें बहुत-सी ऐसी भी थीं जिन्हें धार्मिक विधि के अनुसार अशुद्ध माना जाता था। इसके अतिरिक्त अपने पुनरुत्थान के बाद यीशु सबसे पहले मरियम मगदलीनी (Maria Magdalena) को दिखाई दिया और इस प्रकार दिखाया कि वह उस समय की सामान्य रूप से प्रचलित संस्कृति के विरुद्ध एक स्त्री की गवाही का आदर करता था। और सुसमाचारों के लेखक स्त्रियों को पुनरुत्थान की पहली गवाहों के रूप में बताने के लिए तैयार थे, यद्यपि न्यायालय में स्त्री की बात सामान्यतः मान्य नहीं थी।

निस्संदेह इन सब बातों ने इसमें योगदान दिया कि पौलुस स्त्रियों के बारे में कैसे सोचता था। प्रेरितों के काम और उसकी पत्रियों में हम पौलुस के बारे में जो पढ़ते हैं, वह एक ऐसे पौलुस को प्रकट करता है जो स्त्रियों को स्वीकार करने में संस्कृति-विरोधी और क्रांतिकारी था। पौलुस के लिए पुरुष और स्त्रियाँ समान रूप से मसीह में छुड़ाए गए थे, वे मसीह की देह में एक थे, वे परमेश्वर के राज्य में समान रूप से याजक थे, आत्मा समान रूप से उन पर उंडेला गया था, और दोनों को एक दूसरे की और संसार की नम्रता और प्रेम से सेवा करनी थी। उसके धर्मविज्ञान की मूल रेखाएँ कलीसिया में स्त्रियों और पुरुषों की समानता के विषय में बहुत कुछ कहती हैं। और 1 थिस्सलुनीकियों

2:7 के बारे में सोचिए, जहाँ पौलुस स्वयं को दूध पिलाने वाली माता के रूप में प्रस्तुत करता है। यदि पौलुस वह सामान्य पुरुष-अहंकारी होता जो अपने नाज़ुक पुरुष-अहं की रक्षा करता है, तो इसकी अपेक्षा कोई नहीं करता!

आइए रोमियों 16 से आरंभ करें

यह जानने के लिए कि पौलुस अगुवाई के पदों पर स्त्रियों के बारे में क्या सोचता था, हमें रोमियों को लिखी उसकी महान पत्री से आरंभ करना होगा। और हमें अध्याय 16 खोलना होगा। मेरा विचार है कि हममें से अधिकांश ने इस अध्याय पर बस सरसरी नज़र डाली है – यह केवल नामों का, उन लोगों का एक संग्रह लगता है जिन्हें पौलुस नमस्कार भेजता है। परन्तु वास्तव में यह एक बहुत रोचक अध्याय है। पौलुस कभी रोम नहीं गया था। इस पत्री में, जिसमें वह स्पेन के लिए अपने योजनाबद्ध मिशन के लिए रोमियों का समर्थन पाना चाहता है, वह रोम की घरेलू कलीसियाओं के अगुवों को ध्यानपूर्वक नमस्कार भेजता है। रोम की कलीसिया कोई एक बड़ी मंडली नहीं थी, बल्कि छोटे-छोटे समूहों की एक शृंखला थी, जो लोगों के घरों में, अक्सर तंग किराये के मकानों में, इकट्ठे होते थे। अध्याय 16 के नामों से हम बहुत कुछ पहचान सकते हैं – कुछ दासों के नाम हैं, कुछ यहूदी नाम हैं और कुछ अन्यजाति नाम हैं। और उनमें से कुछ स्त्रियों के नाम हैं। प्रिस्का (Prisca), त्रूफ़ैना (Tryphaina), त्रूफ़ोसा (Tryphosa), मरियम (Maria), पिरसिस (Persis) और यूलिया (Julia) जैसे लोग। ये सब रोम में विश्वासियों की छोटी मंडलियों की अगुवा या सह-अगुवा थीं। वास्तव में जिन सहकर्मियों की पौलुस यहाँ उनके मसीही कार्य के लिए प्रशंसा करता है, उनमें से दो-तिहाई से अधिक स्त्रियाँ हैं। परन्तु तीन स्त्रियाँ विशेष रूप से उभरकर सामने आती हैं।

फ़ीबे

पहली: फ़ीबे (Phöbe), जिसके बारे में पौलुस कहता है कि वह किंख्रिया की कलीसिया की सेविका या डीकन है। कुछ अनुवादों ने "डीकन" (Diakonin) चुना है, परन्तु यूनानी में ऐसा कोई (स्त्रीलिंग) शब्द नहीं है। जब हम देखते हैं कि पौलुस दूसरे स्थानों पर इस शब्द का उपयोग किस प्रकार करता है, तो वास्तव में इसमें कोई संदेह नहीं रह सकता कि फ़ीबे कुरिन्थुस की कलीसिया की एक अगुवा है, जहाँ पौलुस पत्री लिखते समय था। जब हम पद 1 और 2 में पौलुस द्वारा प्रयुक्त भाषा और शब्दों को ध्यान से देखते हैं, तो उस समय के पत्रों के बारे में हम जो कुछ जानते हैं उसके अनुसार फ़ीबे कुछ प्रतिष्ठा वाली व्यक्ति है, और वह कुरिन्थुस की कलीसिया की एक अगुवा है, जिसे पौलुस की अत्यंत महत्वपूर्ण पत्री को रोम पहुँचाने का दायित्व सौंपा गया है।

उस समय यह प्रचलित था कि जो व्यक्ति पत्र पहुँचाता था, वही उसे पढ़कर सुनाता था और पाने वालों को उसकी व्याख्या करता था। क्या यह रोचक नहीं है? रोमियों को लिखी पौलुस की पत्री उसके लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण थी – वह वहाँ नहीं गया था, परन्तु शुभ समाचार को साम्राज्य के पश्चिम तक ले जाने के लिए इन मसीहियों का समर्थन पाना चाहता था, और इसलिए वह सुसमाचार की अपनी समझ को समझाने में बहुत सावधानी बरतता है। वह अपनी पत्री किसे सौंपता है? फ़ीबे को, इस अगुवाई करने वाली स्त्री को, जो उसे रोम ले जाती है। बात और भी रोचक हो जाती है – क्योंकि संभव है कि रोम पहुँचने पर फ़ीबे प्रचलित रीति के अनुसार अलग-अलग घरेलू कलीसियाओं में गई और पत्री पढ़कर सुनाई (ध्यान रखिए कि पढ़ने-लिखने की कठिनाइयों के कारण लोग पत्री को पढ़ते कम, सुनते अधिक थे) और फिर समूहों के साथ बैठी, ताकि यह सुनिश्चित करे कि वे समझ गए हैं कि पौलुस क्या कहना चाहता था।

हम कल्पना कर सकते हैं कि पौलुस कुरिन्थुस में फ़ीबे के साथ बैठा, उसके साथ पत्री को पढ़ा और उसे बताया कि वह उसे कैसे पढ़वाना चाहता है, किस बात पर ज़ोर देना चाहता है और कौन-से भाग उसे संभवतः समझाने पड़ेंगे। इस प्रकार फ़ीबे – एक कलीसिया-अगुवा, जिसे प्रेरित ने रोमियों को लिखी अपनी पत्री को समझाने और सिखाने का दायित्व सौंपा – उस बात से बिल्कुल मेल नहीं खाती जो हमने स्त्री अगुवों और शिक्षकों के बारे में पौलुस से सुनी है।

प्रिस्का

प्रिस्का (Prisca), या प्रिस्किल्ला (Priscilla), जैसा लूका उसे प्रेरितों के काम में कहता है, वह थी जिसके साथ और उसके पति अक्विला (Aquila) के साथ पौलुस ने सुसमाचार में काम किया। छह उल्लेखों में से चार बार प्रिस्का का नाम उसके पति से पहले आता है, जो यूनानी और इब्रानी संस्कृति में असामान्य था और उस महत्वपूर्ण, शायद और भी अधिक महत्वपूर्ण भूमिका की ओर संकेत करता था जो दंपति की सेवकाई में वह निभाती थी। लूका दोनों को – निश्चय ही प्रिस्का को भी सम्मिलित करते हुए – अपुल्लोस (Apollos) के शिक्षकों के रूप में उभारता है, जो यीशु के पहले अनुयायियों में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति बना। इसलिए प्रेरितों के काम से ही हम जानते हैं कि प्रिस्का एक कलीसिया-अगुवा और शिक्षिका थी जो पुरुषों को शिक्षा देती थी। जिस समय पौलुस ने रोमियों की पत्री लिखी, उस समय तक दोनों रोम में बस गए थे और एक घरेलू कलीसिया की अगुवाई करते थे। पौलुस उन्हें हार्दिक नमस्कार भेजता है, और फिर से प्रिस्का का नाम पहले रखता है।

यूनिया

परन्तु फिर यूनिया (Junia) भी है, जो पद 7 में सामने आती है। "अन्द्रुनीकुस और यूनिया को, जो मेरे कुटुंबी हैं और मेरे साथ बंदीगृह में थे, नमस्कार कहो; वे प्रेरितों में प्रतिष्ठित हैं, और मुझसे पहले मसीह में थे।" पुराना New International Version और कुछ अनुवाद यहाँ नाम को Junias के रूप में देते हैं, जिससे यह संकेत मिलता है कि यह कोई पुरुष है, परन्तु नाम Junia है, एक लैटिन स्त्रीलिंग नाम, जो दासियों या मुक्त की गई स्त्रियों को दिया जाता था। उस समय के साहित्य में इस स्त्री-नाम के बहुत से उदाहरण हैं, परन्तु किसी पुरुष के नाम Junias का एक भी नहीं। प्रसन्नता की बात है कि अब नाम के अर्थ पर कोई विवाद नहीं रहा, और नए New International Version में अब Junia लिखा है। यूनिया एक स्त्री थी, संभवतः अन्द्रुनीकुस (Andronikus) की पत्नी। अतीत में यूनिया को पुरुष बनाने का प्रयास जिस कारण किया गया, वह आगे के शब्द हैं, जिनमें पौलुस कहता है कि यह जोड़ा "प्रेरितों में प्रतिष्ठित था"। पुरुष-प्रधान कलीसिया में यह विचार कि कोई स्त्री प्रेरित हो सकती है, ठीक नहीं बैठता था। जब हम इतिहास को देखते हैं, तो आश्चर्यजनक रूप से पुरुष विद्वानों ने यूनानी पाठ को अक्षरशः बदल दिया, ताकि एक स्पष्ट स्त्री-नाम से एक पुरुष-नाम, अर्थात Junias, बना दिया जाए। इस इतिहास के बारे में थोड़ा जानना सार्थक है।

बाइबल-विद्वान यूनानी नए नियम के एक संकलित पाठ का उपयोग करते हैं – एक ऐसा संस्करण जो हज़ारों प्राचीन हस्तलिपियों की जाँच के बाद मूल लेख को सबसे अधिक संभावित रूप में प्रस्तुत करता है। धर्मसुधार से लेकर 1927 में नेस्ले (Nestle) के यूनानी नए नियम के संस्करण तक, यूनानी नए नियम के संकलित पाठों में रोमियों 16 की यूनिया एक स्त्री थी। परन्तु फिर नेस्ले ने निर्णय लिया कि नाम पुरुषवाचक ही होना चाहिए, और इस प्रकार अचानक "Junias" प्रकट हो गया और Junia एक फ़ुटनोट बन गई। पचास वर्ष बाद विद्वानों द्वारा संकलित यूनानी पाठ ने फ़ुटनोट को भी हटा दिया। केवल 1990 के दशक में सुधार किया गया, और वह बात स्पष्ट की गई जो सब आरंभिक यूनानी हस्तलिपियाँ और विद्वान जानते थे: यूनिया एक स्त्री थी।

परन्तु यद्यपि आज इस पर सब सहमत हैं, कुछ लोगों को यह बात इतनी असुविधाजनक लगी जो पौलुस इस पद में वास्तव में कहता है – कि यूनिया, एक स्त्री, प्रेरित थी – कि उन्होंने "प्रेरितों में प्रमुख" को बदलकर "प्रेरितों में भली-भाँति परिचित" करने का प्रयास किया। उदाहरण के लिए English Standard Version में यही स्थिति है।

परन्तु सब आरंभिक कलीसियाई पिताओं के लिए, जो यूनानी बोलते थे और भली-भाँति जानते थे कि किसी शब्द का अनुवाद कैसे किया जाता है, इस वाक्य का अर्थ "प्रेरितों में प्रतिष्ठित" ही था!

चौथी शताब्दी में क्रिसोस्टम (Chrysostomus) ने यह कहा:

> प्रेरित होना ही बड़ी बात है, परन्तु उनके बीच भी विशिष्ट होना – सोचिए, यह कैसा अद्‌भुत स्तुति-गान है। जिसका आदर होना चाहिए, उसका आदर हो! इस स्त्री की बुद्धि कितनी महान थी कि उसे प्रेरित की उपाधि धारण करने के योग्य भी समझा गया।

यूनिया एक स्त्री थी, और वह एक प्रेरित थी, पौलुस के समय में कलीसिया की एक प्रतिष्ठित अगुवा।

तो यदि ऐसा ही है, और साथ में रोमियों 16 की फ़ीबे, प्रिस्का और दूसरी स्त्री कलीसिया-अगुवे भी हैं, तो निष्कर्ष अनिवार्य है – पहले मसीही समूहों में स्त्रियाँ पुरुषों की तरह अगुवाई और शिक्षा में पूरी भूमिका निभाती थीं। **चूँकि ऐसा है, इसलिए वे सब दूसरे पाठ, जिनके बारे में हम पहली दृष्टि में सोचते हैं कि वे रोमियों 16 के विपरीत हैं, इसी पाठ के प्रकाश में देखे जाने चाहिए।** प्रेरितों के काम की गवाही के साथ, यही आरंभ करने का सही स्थान है।

दूसरे पाठ

तब 1 कुरिन्थियों और 1 तीमुथियुस के वे दो पाठ, जिनका उल्लेख पहले हो चुका है, अपवाद जैसे दिखाई देते हैं, और इन पदों की पृष्ठभूमि के बारे में बहुत कुछ कहा जा सकता है जो हमें पौलुस की यहाँ कही गई बात को सार्वभौमिक रूप से लागू घोषित करने से रोकेगा। **बाइबल पर विश्वास करने वाले मसीहियों के लिए यह असामान्य होगा कि वे शेष नए नियम की सशक्त गवाही पर ध्यान दिए बिना केवल दो पदों के आधार पर कोई धर्म-वैज्ञानिक राय बना लें। परन्तु दुर्भाग्य से ठीक यही हुआ है।**

यदि आप इस विषय में और गहराई से जाना चाहते हैं, तो इन दोनों पाठों की सबसे विस्तृत जाँच आपको फ़िलिप पेन (Philip Payne) की पुस्तक Man and Woman, One in Christ में मिलेगी। संक्षेप में, पाठ की अपनी सावधानीपूर्ण जाँच में पेन इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि 1 तीमुथियुस 2:8-15 को पौलुस के इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर पढ़ना चाहिए कि वह उस झूठी शिक्षा का सामना करे जिसने इफिसुस की कुछ स्त्रियों को बहुत प्रभावित किया था, जिनकी इस शिक्षा को फैलाने वाली गतिविधियों पर रोक लगानी आवश्यक थी। इस खंड में कुछ भी "स्त्रियों के लिए शिक्षा देने या पुरुषों पर अधिकार चलाने के किसी सामान्य निषेध" का समर्थन नहीं करता, और न ही इस मत का कि "स्त्रियाँ स्वभाव से आत्मिक या अन्य विषयों में पुरुषों को शिक्षा देने या उन पर अधिकार चलाने के लिए अयोग्य हैं"। उसी प्रकार, वे कहते हैं, "पौलुस इस विशेष निषेध को सब कलीसियाओं और सब समयों के लिए सामान्य नहीं बनाता"।

1 कुरिन्थियों 14:34-35 की उनकी जाँच तो और भी सावधानीपूर्ण है, और दूसरे रूढ़िवादी विद्वानों के साथ वे आरंभिक यूनानी हस्तलिपियों के प्रमाणों के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि ये पद संभवतः दूसरे प्रतिलिपिकारों द्वारा जोड़े गए हैं और संभवतः पौलुस की मूल पत्री का भाग नहीं थे।

इसलिए इन दोनों पाठों को न तो मानक मानने के, और न ही किसी भी प्रकार से इस बात का प्रतिनिधि मानने के बहुत अच्छे कारण हैं कि पौलुस कलीसिया में शिक्षिकाओं और अगुवों के रूप में स्त्रियों के बारे में क्या सोचता था।

अगुवाई में स्त्रियाँ

पौलुस की पत्रियों में और भी स्थान हैं जिनकी जाँच आवश्यक है, यदि हम इस बात का एक अधिक व्यापक चित्र बनाना चाहते हैं कि पौलुस कलीसिया में और पारिवारिक संबंधों में स्त्रियों के बारे में क्या सोचता था। हमारा उद्देश्य केवल कलीसिया में प्रचलित उस पुरुष-प्रधान दृष्टिकोण को सुधारना था जिसने सेवकाई, शिक्षा और अगुवाई में स्त्रियों के विषय में पौलुस की बातों को विकृत कर दिया है। इस विषय पर पौलुस जो कुछ कहता है, उसे पढ़ते समय रोमियों 16 के खंड पर अवश्य ध्यान देना चाहिए। 1 कुरिन्थियों 11 पर भी ध्यान देना महत्वपूर्ण है, जहाँ पौलुस यह मानकर चलता है कि स्त्रियाँ कलीसिया में सार्वजनिक रूप से भविष्यद्वाणी कर सकती हैं।

धीरे-धीरे ऐसा लगने लगा है मानो पौलुस को अन्यायपूर्वक बदनाम किया गया हो। ऐसा लगता है कि सदियों के दौरान स्त्रियों के साथ गंभीर अन्याय हुआ और मसीही कलीसिया ने स्त्रियों को मसीही सेवकाई की बुलाहट पर चलने की अनुमति न देकर बहुत कुछ खो दिया।

यह कलीसिया के इतिहास पर एक कलंक है। अब बहुत समय हो चुका है कि हर मसीही कलीसिया, संप्रदाय और समूह यह सुनिश्चित करे कि स्त्रियों को परमेश्वर के अनुग्रह, वचन और आत्मिक देखभाल की सेविकाओं के रूप में अपनी भूमिका को पूरी तरह निभाने का अवसर मिले।

हमें पौलुस के शब्दों को गंभीरता से लेना होगा: उसके लिए न दास था न स्वतंत्र, न यहूदी न यूनानी, न पुरुष न स्त्री – हम सब मसीह में एक हैं। पुरुष और स्त्री के बीच का भेद, और साथ ही वे दो दूसरे विभाजन भी जिनका पौलुस यहाँ उल्लेख करता है, मसीह की देह में मिट गए हैं।

यह केवल इस तथ्य पर एक टिप्पणी नहीं है कि परमेश्वर के सामने स्त्रियों और पुरुषों की आत्मिक स्थिति एक ही है – गलातियों 3:28 में पौलुस का "क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो" मसीही समुदाय की सामाजिक वास्तविकता पर प्रभाव डालता है। कुलुस्सियों 3:11 के एक समानांतर पद में, उससे पहले और बाद के पदों से स्पष्ट होता है कि पौलुस इस प्रकार के विभाजनों पर विजय को कलीसिया के सामुदायिक जीवन पर एक व्यावहारिक प्रभाव के रूप में देखता है।

और यह हमें सुसमाचार के उन बड़े विषयों पर वापस ले आता है जिन पर हमने विचार किया है। यीशु में परमेश्वर अपने संसार को बचाने और नया करने के लिए, और हमें पूर्ण मनुष्य बनाने के लिए आया है। इसका अर्थ है कि हमारे बीच कोई सामाजिक, वर्ग-आधारित या जाति-आधारित भेद नहीं हैं। कोई जातीय या नस्लीय विभाजन भी नहीं हो सकता, क्योंकि हममें से हर एक, जिसे मसीह ने छुड़ाया है, इस बात के लिए स्वतंत्र है कि परमेश्वर से वैसे प्रेम करे और उसकी वैसे सेवा करे जैसे उसने हमें बुलाया है। और ठीक यही बात स्त्रियों और पुरुषों पर भी लागू होती है।

पौलुस हर उस दृष्टिकोण का दृढ़ता से विरोध करता जो स्त्रियों को नीचा दिखाता है, उनसे भेदभाव करता है और कहता है कि आप कलीसिया में यह या वह नहीं कर सकतीं। यह तो पूरी तरह पुरानी व्यवस्था का भाग है। एक नई सृष्टि है।

हम, स्त्री और पुरुष, मिलकर नम्रता से प्रभु मसीह की सेवा करते हैं, जब परमेश्वर हमें अनुग्रह और सामर्थ्य देता है।

मनन

जिन कलीसियाओं से आपका संबंध रहा है, उनमें स्त्रियों के साथ किए गए व्यवहार के बारे में आपके क्या अनुभव रहे हैं? क्या रोमियों 16 की यूनिया (Junia) की कहानी आपको आश्चर्यचकित करती है? इस बात का क्या प्रभाव है कि पौलुस यूनिया को प्रेरितों में गिनता है? **क्या आप मानते हैं कि प्रेरितों के काम और रोमियों 16 में अगुवाई के पदों पर स्त्रियों के बारे में जो लिखा है, उसका प्रभाव 1 कुरिन्थियों 14 और 1 तीमुथियुस 2 के पाठों से अधिक होना चाहिए?**

कलीसियाएँ अगुवाई में स्त्रियों और पुरुषों के बीच संतुलन को फिर से कैसे स्थापित कर सकती हैं?

Burnett, Gary W.. Paul Distilled, Wipf & Stock. Kindle संस्करण।

जर्मन अनुवाद: Hans-Jörg Ronsdorf, कृपापूर्ण अनुमति से, इसकी सहायता से: www.deepl.com

22 अप्रैल 2022